पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

(क) प्रेम का धागा टूटने पर पहले की भाँति क्यों नहीं हो पाता?

(ख) हमें अपना दुख दूसरों पर क्यों नहीं प्रकट करना चाहिए? अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार कैसा हो जाता है?

(ग) रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धन्य क्यों कहा है?

(घ) एक को साधने से सब कैसे सध जाता है?

(ङ) जलहीन कमल की रक्षा सूर्य भी क्यों नहीं कर पाता?

(च) अवध नरेश को चित्रकूट क्यों जाना पड़ा?

(छ) नट किस कला में सिद्ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है?

(ज) मोती, मानुष, चून के संदर्भ में पानी के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर (क) प्रेम आपसी विश्वास, लगाव एवं स्नेह का प्रतीक होता है। इस प्रेमपूर्ण संबंध की डोर यदि एक बार टूट जाती है तो उसमें पहले जैसी सरसता और अपनापन नहीं रह जाता और मन में दरार पड़ जाती है। जिस प्रकार धागे को जोड़ने की कोशिश में धागे में गाँठ पड़ जाती है, उसकी समरसता नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार प्रेमपूर्ण संबंधों की डोरी टूटने पर उसमें संशय की गाँठ पड़ जाती है।

(ख) हमें अपना दुख दूसरों के सामने इसलिए नहीं प्रकट करना चाहिए क्योंकि दूसरे लोग हमारे दुख की बात सुनकर मन ही मन प्रसन्न होते हैं। कोई किसी का दुखदर्द नहीं बाँटता है। दूसरे लोग दुखदर्द की बात सुनकर उसका मज़ाक उड़ाते हैं, सच्ची सहानुभूति कोई नहीं जताता है।

(ग) रहीम ने पंक-जल को धन्य इसलिए कहा है क्योंकि उस कीचड़ युक्त जल को पीकर कई कीट-पतंगे और लघु प्राणी अपनी प्यास बुझा लेते है। परंतु सागर का खारा पानी किसी की प्यास नहीं बुझाता। दूसरे प्राणियों की प्यास बुझाकर जीवन-रक्षा करने के कारण कवि ने पंक-जल को अथाह जलराशि संपन्न सागर के जल की अपेक्षा धन्य माना है।

(घ) एक ही परमात्मा को साधने से अर्थात निष्ठापूर्वक ध्यान करने से जीवन के सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं क्योंकि परमात्मा ही जीवन का मूल आधार है। जिस प्रकार जड़ को सींचने से फल-फूल-पत्तियाँ स्वयं विकसित होने लगते हैं, उसी प्रकार जीवन के आधारभूत सत्य परमात्मा के चिंतन-मनन और ध्यान से जीवन के सभी कार्य सफलतापूर्वक संपन्न होते हैं। आशय यह है कि एक मुख्य कार्य की सिद्धि से व्यक्ति के सभी कार्य स्वतः सिद्ध हो जाते हैं।

(ङ) जलहीन कमल की रक्षा सूर्य भी नहीं कर पाता क्योंकि जल ही कमल की मूल संपत्ति है। जल कमल को जीवित रखता है। यही वह आंतरिक और अनिवार्य शक्ति है जो कमल-पुष्प को विकसित करती है। सूर्य की किरणें अपनी गर्मी से कमल की पंखुडियों को खोलकर उसे खिला देती है परंतु उन पंखुडियों में सुंदरता, तरलता, कोमलता और सुगंध का संचार जल ही करता है। अतएव जलहीन सरोवर में कमल नहीं खिल सकता।

(च) अवध नरेश श्री रामचंद्र जी ने माता-पिता की आज्ञा से चौदह वर्ष का वनवास काटने के लिए अयोध्या से प्रस्थान किया था। चित्रकूट में आकर उन्होंने वनवास के कुछ दिन व्यतीत किए। यहाँ पर उन्हें शांति प्राप्त हुई और यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य से आकर्षित होकर वे यहाँ पर रम गए।

Scanned by CamScanner

(छ) नट अपने शरीर को गोलाकार आकृति में समेटकर, कुंडली मारकर खंभे के ऊपर चढ़ जाता है। इस प्रकार वह अपने शरीर को गोलाकार आकृति में समेटने और कुंडली मारकर ऊपर चढ़ने की कला में सिद्धहस्त होता है।

(ज) मोती के संदर्भ में पानी का अर्थ है चमक, मानुष के संदर्भ में आत्मसम्मान और चून के संदर्भ में पानी आटा गूँधने के काम आता है। कवि का कहना है कि पानी के बिना मोती पर चमक नहीं आती है और चमक न होने से मोती का कोई मूल्य नहीं होता। उसी प्रकार पानी रूपी आत्मसम्मान के बिना मनुष्य का भी कोई मोल नहीं होता है। पानी के अभाव में आटा गूँध कर रोटी नहीं बनाई जा सकती, इसलिए मोती, मानुष, चून के संदर्भ में पानी का जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

Scanned by CamScanner